RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-07
July-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना

डॉ. विद्या शशीशेखर शिंदे

आय. सी. एस. कॉलेज, खेड, रत्नागिरी, महाराष्ट्र

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 05 July 2018

ABSTRACT

प्रेमचंदजी ने विकासात्मक स्तर पर नारी को ही श्रेष्ठता प्रदान करते हुए लिखा है– ''मैं प्राणियों के विकास में स्त्री के पद को पुरुषों के पद से श्रेष्ठ समझता हूँ, उसी तरह जैसे प्रेम, त्याग और श्रद्धा को हिंसा और संग्राम और कलह से श्रेष्ठ समझता हूँ। स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना प्रकाश अँधेरे से।''1 साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में श्रीमती ममता कालिया का स्थान श्रेष्ठ रहा हैं. उनके उपन्यासों में परंपरा एवं रुढियों को तोडती, अपने स्वतंत्रता के लिए जूझती, कभी सफल तो कभी असफल होती, नवीन मूल्यों को ग्रहण करने में सशक्त नारी का जो रुप उभर आया हैं, वह वास्तव में अभिनव ही हैं. बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के प्रायः प्रत्येक कोने में नारी के सामने अपनी हीन अवस्था से उभरने की समस्या सबसे प्रमुख थी. यद्यपि उस समस्या का समाधान अब भी नहीं हो पाया हैं., किंतु नारी उसके लिए पूर्ण तत्परता से सचेष्ट हैं. आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक तथा सामाजिक अधिकार, शिक्षा तथा प्रगति आदि कुछ समस्याएँ जिनके लिए नारी ने संघर्ष आरंभ किया हैं. ममताजी ने इस कार्य में विशेष रुचि लेकर स्वयं नारी के साथ–साथ समाज के ठेकेदारों को उसकी दयनीय दशा के प्रति सजग करने की चेष्टा की. अस्तित्व प्राप्ति के लिए निरंतर कियाशील रहनेवाले उनके नारी पात्रों की विभिन्न चेतनाओं को प्रमाण के रुप में पाठकों के सामने रखना हैं.

Objectives

1. सन साठ के बाद समय के अंतराल में उसे अपनी स्वतंत्र सत्ता का बोध होता रहा. उसे सबके सामने लाने का प्रयास करना हैं.
2. सन साठ के बाद स्त्री ने अपने अंदर की निहित शक्ति को पहचाना और वह निरंतर चलते आ रहे नारी शोषण और दमन के वर्क से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगी. उसे उपन्यासों के नारी पात्र के माध्यम से दिखाना हैं.
3. सन साठ के बाद की परिस्थितियोंने नारी को उन बंधनों के प्रति विद्रोहिणी रुप में प्रस्तुत किया.जिसके कारण परिवर्तन की चाहत स्त्री में किस तरह बढ गयी यह दिखाना हैं.
4. ममता कालिया जी ने अस्तित्व प्राप्ति के लिए निरंतर सचेष्ट रहनेवाले उनके नारी पात्रों की विभिन्न चेतनाओं को प्रमाण के रुप में किसतरह प्रस्तृत किया हैं उसे पाठकों को दर्शाना हैं.

प्रस्तावना –

वस्तुतः हर युग तथा हर स्थिति में मानव जीवन समस्याओं से घिरा होता हैं.वैसे भी जीवन को समस्याआ से जूझते हुए ही मनुष्य अपने लक्ष्य तक पहुँचता हैं. वर्तमान युग विषमता और समस्याओं का युग हैं.पह जीवन की विभिन्न परिस्थितिओं के साथ नित नवीन समस्याओंका सामना करने का युग हैं.उपन्यासकार जीवन की विविध समस्याओं से प्रभावित रहता हैं. जीवन की विविध समस्याओं का सामना करने का युग हैं. यद्यपि यह हर समय संभव नहीं होता. फिर भी आज के उपन्यासकार का प्रधान प्रयोजन जीचन के विविध समस्याओं का उद्घाटन और उसका हल खोजने का प्रयास करना हैं. ममता कालिया जी ने यह हल खोजने की चेतावनी दी हैं. स्त्री को सशक्त करने का प्रयास किया हैं उसे पाठकों के सामने लाना यह मेरे संशोधन का मुख्य प्रयास रहा हैं.

विवाहपूर्व विवाह बंधन की चेतना –

वस्तुतः नारी के समक्ष विवाह के पूर्व कई ऐसे निर्णायक मोड उपस्थित हो जाते हैं, जिसके कारण परिवार बसाने के के पहले ही वह जीवन प्रति हताश हो जाती हैं. जिसके कारण वह विवाह बंधन में मन के विरोध में बॅध जाती हैं. प्रेम, शिक्षा, दहेज, अधिकार , सेक्स तथा विवाह को लेकर कई ऐसे निर्णयात्मक बिंदू हैं, जिसके कारण नारी को अपनी चेतना के स्तर पर दोहरा संघर्ष करना पडता हैं.ममता जी के उपन्यासों में नारी की विवाह पूर्व विभिन्न संवेदनाओं को बहुत मात्रा में स्थान दिया हैं. प्रेम की जटिलता का अनुमान करके ही शायद 'नरक दर नरक' की नायिका उषा अपने जीवन में काफी चौकन्नी हैं. फिर भी पता नहीं कैसे बडी जल्दी जगन और उषा के बीच प्रेम घुसपैठ कर गया. उषा को प्रेम के नशे में होश खोना अच्छा लगा.

प्रेम की तरलता का अहसास ही भिन्न होता हैं. 'एक पत्नी के नोट्स' की 'कविता' का साहित्य की छात्रा होना एक बात थी. संदीप के परिचय के बाद उसका जीवन वही होते हुए भी वही नहीं रहा था. उसमें रुप, रंग और रस आ मिला था. उसकी समस्त चेतना संदीप के आसपास मॅडराने लगी.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

उसे वास्तव में लगता कि वह राधा है और संदीप मदनातुर कृष्ण. प्रम का नशा बडा होता हैं. प्रेम की इसी चेतना में 'प्रेम कहानी' की यशा अपने प्रेमी को मिलने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती हैं. यशा जया के साथ प्रेम करती हैं. पर इस समय उसे लगा कि '' निजी भविष्य कितना रहस्यमय, कितना मोहक बनता जा रहा हैं. अपने भाग्य, अपने भविष्य को लेकर असहय जिज्ञासा होने लगी. मुझे लगा, शायद पढाई में मै भी नहीं लगा पाउंगी''2

अक्सर देखा जाय तो प्रेम के इस गहरे अहसास में सफलता हाथ आती है तो ठिक है, प्रेम की असफलता में नारी अपना घर बसाने के पहले ही लगभग आधी मर चुकी होती हैं. पुरुष तो इस संबधों को अपना पौरुषत्व समझ भूल जाता होगा. कोमलता का प्रतिक मानी जानेवाली संवेदनशील नारियॉ अपने जीवन में हताश हो जाती हैं.'बेघर' की संजीवनी को क्या पता था, प्रेम के नाम पर उसका सर्वस्व लुटा जा रहा हैं. पर जैसे ही परमजीत के बंद कार्यालय में आकर दरवाजा बंद करता हैं, संजीवनी जैसे जागकर बौखला जाती हैं और बोलती हैं– ''हम यहॉ नहीं जायेंगे.''3

प्रेम और विवाह के प्रति तटस्थ रहनेवाली 'लडकियॉ' की लल्ली ओर अफशॉ अविवाहित जीवन के विविध आयाम उपस्थित करती हैं. महानगरिय जीवन की त्रासदी में उन दोनों की चेतना सदैव अपने अस्तित्व को रक्षा के इर्द गिर्द दिखती हैं. बंबई जैसे महानगर में अकेली रहनेवाली सुशिक्षित नौकरीपेशा नायिका निरंतर अपने आसपास की असुरक्षितता का अनुभव करती हैं.

इस प्रकार ममता जी ने उपन्यासों में विवाहपूर्व जीवन मे अपनी विविध समस्याओं से संघर्ष करनेवाले नारी पात्रों की विभिन्न संवेदनाओं का व्यापक विस्तृत धरातल प्राप्त होता हैं. विवाहपूर्ण प्रेम संबधों में विश्वास रखकर किसी सुरक्षित प्रेम संबंधों में विश्वास रखकर किसी सुरक्षित प्रेम प्रसंग का अनुभव प्राप्त करके प्रेम में मर मिटनेवाली यह नारियॉ अपने आधुनिक रुप को प्रस्तुत करती हैं.

पारिवारिक चेतना –

मानव और परिवार का अटूट संबंध हैं. नारी और पुरुष दोनों के संयोग द्वारा ही परिवार का निर्माण हो सकता हैं. हमारा समाज पुरुष प्रधान होने के कारण उसे ही श्रेष्ठ मानता हैं. जबकि परिवार को बनाने में नारी का ही सहयोग अधिक होता हैं. उसके बिना परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती.

वैसे ही परिवार में थोडी बहुत नाराजगी बनी रहती हैं. लेकिन छोटे छोटे झगडे कई बार बहुत भयानक रुप धारण करते हैं. ममता जी के उपन्यासों में नारी पात्रों के पारिवारिक तथा दांपत्य जीवन मे मूल्य विघटन अत्याधिक रुप में परिलक्षित होता हैं. ममता जी ने अपने उपन्यासों मे बिखरे हुए मधुर संबंधों के परिवेश में वर्तमान नारी के संघर्षो का आलेख प्रस्तुत करना चाहा हैं. संभवतः इसी कारण गिडगिडाकर क्षमा याचना करनेवाली नारी के स्थान पर पति को चुनौती देनेवाली नारियों का निर्माण उन्होंने किया हैं.अपने अहं की रक्षा करते हुए पति के अन्याय अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने का साहस करनेवाली नारियॉ अपने भाव को यथार्थ रुप में प्रस्तुत करती हैं.'बेघर' का परमजीत संजीवनी के प्रेम को दैहिक संबंधों का जामा पहनाकर 'रमा' से शादी करता हैं. संजीवनी के सपनों की दुनिया उजड जाती हैं और विवाहित रमा की त्रासदीयॉ शुरु हो जाती हैं. रमा को ऐसा गुस्सा तब भी आता जब वह दफतर से शराब पीकर आता हैं. शराब के बारे में रमा ने फिल्मों में देखा था. कितनी बार संबंधो को लेकर उनकी झडप होती पर रमा मुँह बिचकाकर यह कहती ,कैसी घटिया बात पर लड रहे हो। तुम्हें शर्म नहीं आती, एक बच्चे के बाप हो गये.''4

मानसिक झुँझलाहट के क्षणों में दाम्पत्य जीवन की अर्थवत्ता का चिंतन करनेवाली 'नाक दर नरक' की नायिका उषा अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए निरंतर सचेत रहती हैं. विवाह से पैदा हुई जानलेवा दिनचर्या के बीच अब जगन की ओर से संपर्क संकेत उषा को असहय थकान से भर देते हैं. जहॉ संप्रेषण ही समाप्त हो जाय वहॉ संवाद का कोई मतलब नहीं रहता. ऐसी अवस्थामें उषा का शरीर हिंसक हो उठता था. जगन बाहर की परेशानियों का गुस्सा घर में उषा पर निकालता हैं. ऐसे ही एक दिन भकभकाया हुआ घर में घुसा, उषा ने विजेता मुद्रा में कहा, ''लो खाना भी तैयार हैं.तुम बिल्कुल ठिक वक्त पर आए हो.'' वह बरस गया, ''ऐसी की तैसी तुम्हारे खाने की. मेरे सामने यों बाल बिखरकर, चुडैल की तरह मत आया करो.'' त बवह म नही मन में भीषण गालीयॉ देती हुई उषा गुसलखाने में चली जाती हैं. वहॉ पानी नहीं था. दाम्पत्य जीवन की निरसता का यह अनुभव 'उषा' के लिए जितना जानलेवा सिद्ध हुआ, उतना ही 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता के लिए भी.

इस प्रकार ममताजी के उपन्यासों में नारी पात्र अपने दाम्पत्य, पारिवारिक जीवन की सुख–दुःखात्मक अनुभूतियों को यथातथ्य प्रस्तुत करती हैं. कविता तथा उषा के दाम्पत्य जीवन की वह पीडादायी अनुभूतियॉ न केवल संदीप और जगन के अहं का पर्दापाश करती हैं वरन आम पुरुष के अहं को चुनौती देने का पर्याय सिद्ध होती हैं.

सामाजिक चेतना–

वर्तमान समाज में नारी पाश्चात्य सभ्यता की अंधी दौड में भागती हुई नजर आती हैं. साथ ही उसका सामाजिक परिवेश बदल रहा हैं. वह एक 'नयापन' प्राप्त करना चाहती हैं. आधुनिक यंग में 'युद्ध' मनुष्य की नियती बन गया हैं. जीवन के हर क्षेत्र में छल प्रपंच, आपाधापी का बोलबोला हैं. इस दृष्टी से ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में सामाजिक चेतना के परिवेश में स्त्री पुरुष संबंधों के अन्तर्विराधों को विशेष स्थान दिया हैं. 'बेघर' की संजीवनी अपने प्रेम वैयक्तिक

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

पीडाओं को व्यक्त करती हैं. वैयक्तिक धरातल पर परमजीत के प्रति उसका प्रेम गहरा क्यों न हो, परमजीत और विपीन द्वारा भोगी यातनाओं का सामाजिक महत्व उतना ही हैं. आग्रह, गुस्सा, और कभी न बोलने का डर या छोड देने की धमकी के सामने स्त्री स्वयं नर्वस या निढाल हो जाती हैं.कौमार्य के मिथक और उसकी भयावह मानसिक प्रतिक्रियाओं के बारे में 'सेंकड सेक्स' में काफी विस्तार के साथ विश्लेषण किया हैं. वस्तुतः स्त्री के कुँआरेपन को लेकर पुरुष समाज में जो रुढ धारणाएँ हैं, वे न सिर्फ अवैज्ञानिक और अमानवीय हैं. समाज की नैतिक अनैतिक मान्यताओं के संदर्भ में भी अक्सर देखा जा सकता हैं कि उस पर पुरुष प्रधान संस्कृति का अधिकार बना रहा हैं.

एक पत्नी के नोट्स' की कविता सामाजिक संबंधो को तर्क की कसौटी पर परखते हुए उसका निरंतर चिंतन करती दिखाई देती हैं. अपने परिवार के सामाजिक अस्तित्व की चेतना उसमें तीव्र हैं. संभवतः इसी कारण सामाजिक संबंधों के प्रति संदीप की अव्यावहारिकता को अस्वीकार करते हुए उसका विरोध करती हैं.संदीप ने एक दिन घर आते दास्तों को देखकर स्वयं घर न होने का बहाना बनाया था. सामाजिक संबंधों के प्रति सचेत रहनेवाली कविता उसका विरोध करती हुई कहती हैं– ''मैं तो इस चीज के विल्कुल ख्लिाफ हूँ कि तूम घर पर रहकर लोंगों से कहलवाओ कि तुम नहीं हो, आइन्दा मुझे यह गंदा काम न देना.''5 सामाजि संम्पर्को के इन्हीं दौर से गुजरते हुए लडकियॉ' की लल्ली और अफशॉ दोनो गिरते सामाजिक मूल्यों की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करती हैं.ऐसा नहीं हैं कि लल्ली को दोस्तों की कमी थी. वह कहती हैं कि– '' खासी सामाजिक जिंदगी थी. लेकिन मैंने सामाजिकता को अपनी सुविधा के अनुसार ही ग्रहण किया था. मुझे यह पसंद नहीं था कि दोस्त कभी भी धडधडाते हुए मेरे घर में घुस आऍ.''6 इस तरह लल्ली समाज में अपना अलग अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश करती हैं.

अतः कहा जा सकता हैं कि ममता जी के उपन्यासों मे नारी की सामाजिक स्वतंत्रता का वास्तविक स्वरुप उजागर हुआ हैं. समाज की दकियानुसी विचारधरा में तबाह होनेवाली संजीवनी, समाज की कृरुपता का अन्वेषण करनेवाली अफशॉ और लल्ली निश्चित रुप से इन दास्तानों का ठोस साहित्यिक प्रमाण हैं. एक औसत नारी के रुप में उषा और कविता के धधकते हदय की आवाज है कि सामाजिक स्वतंत्रता के बिना अन्य सभी स्वतंत्रताऍ अधूरी, खोखली एवं ढोंग हैं.

आर्थिक चेतना –

वर्तमान जीवन संदर्भ में स्त्री–पुरुष की मुख्य प्रवृत्ति है कि धन के लिए वे कुछ भी करने को तैयार हैं. वैसे भी पैसा है तो प्रतिष्ठा हैं, प्रतिष्ठा है तो उनके सारे दोष क्षम्य हैं. सन साठ के बाद के उपन्यासों में भी आधुनिक युगबोध को अर्थ से संपृक्त करते हुए यह बतलाने का प्रयास किया है कि स्त्री पुरुष की चेतना की मूल दिशा अर्थ की उपलब्धी हैं. दोनो की दृष्टी से रुपया शक्ति है,रुपया देवता है, रुपया सबकुछ हैं.

ममताजी के उपन्यासों में अधिकांश नारी पात्र आर्थिक स्वावंलंबन की चेतना के द्वारा संघर्षरत दिखाई देते हैं. आत्मनिर्भरता की भावना से प्ररित रहते हुए वे घर के बाहर दोंनो उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह करते हैं तथा अपने कर्मक्षेत्र में दृढ निश्चय के साथ डटे रहते हैं.शायद यही कारण हें कि'बेघर' का परमजीत संजीवनी भरुचा के संदर्भ में पहली ही मुलाकात में एक साथ बहुत कुछ जान लेना चाहता पर उसने अपने को रोका. परमजीत ने फिल्म का प्रस्ताव उसके समक्ष रखा तो वह बहुत खुश हो जाती हैं.

एक पत्नी नोट्स' की कविता का मानसिक ढॉचा अकादमिक जिंदगी के लिए बना था. वह अपने काम में तन्मय हो जाती थी. कविता की यह आत्मनिर्भरता घर के तनावों का कारण बन जाता हैं. धीरे धीरे संदीप उसके उपर शक करने लगा. बेबुनियाद आरोप पर फिजूल की बहस से कविता को सख्त नफरत थी. दोनों के अपने अपने अहं थे., अपने अपने वहम् थे. वे अपने अपने क्षेत्र में संपूर्ण थे. शायद इसीलिए किसी के आगे झुकना उन्हें बर्दाश्त नहीं था. कविता अपनी नौकरी को महत्व देती हैं. इस तरह आर्थिक महत्व हर कोई अपने जीवन में दे रहा हैं.

निष्कर्ष–

इस विवेचना के आधार पर निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता हैं कि, ममताजी ने युगों से पीडित तथा त्रस्त नारी जीवन के विविध पहलुओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया. उन्होंने नारी जीवन को विषमतापूर्ण और दुःखमय बनानेवाली , काम तथा विवाहसंबंधी पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को उभारकर उनकी सूक्ष्म अनुभूतियों को प्रस्तुत किया हैं. प्रेम, काम और विवाह संबंधी रुढिग्रस्त मान्यताओं को अस्वीकार करनेवाली संजीवनी तथा लल्ली, स्वतंत्रता की चेतना में नवीन आयाम प्रस्तुत करती हैं. पारिवारिक और सामाजिक वाबंदियों का अतिक्रमण करनेवाली उषा और अफशॉ तथा आर्थिक क्षेत्र में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना के लिए संघर्षरत रहनेवाली कविता आदि नारियाफं अपनी प्रगतिशील चेतना के बूते पर संधर्ष के लिए प्रस्तुत होती हुई दिखाई देती हैं.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रंथ –

1. गोदान – प्रेमचंद– पृष्ठ– 126,127
2. एक पत्नी के नोट्स –ममता कालिया पृष्ठ– 9
3. बेघर –ममता कालिया –पृष्ठ –91
4. वही पृष्ठ –170
5. तीन लघु उपन्यास –ममता कालिया पुष्ठ –165
6. वही पृष्ठ –167

© RRIJM 2015, All Rights Reserved